समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक : वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

वर्ष : २०, अंक : १४ १६ जनवरी २००८ शांतिकुंज, हरिद्वार. वार्षिक चंदा रु. २४/-, विदेश में रु. ४००/- मात्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

उस प्राण स्वरुप, दुःख नाशक, सुख स्वरुप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, देव स्वरुप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करते हैं। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

आत्म-निरीक्षण करें : हम जाग्रत् आत्मा हैं या अंधी भेड़

रात्रि सदा नहीं रहती। अंधेरा सदैव कहाँ छाया रहता है? विपत्ति की घटाएँ निरंतर कब घुमड़ती हैं? ग्रहण देर तक कहाँ बना रहता है? अशुभ घड़ियाँ आती तो हैं, पर देर तक नहीं रहतीं। दुःख, अपमान, संकट, घाटा, दुर्भाग्य, विग्रह आदि के क्षण आते तो हैं, पर जल्दी ही चले भी जाते हैं।

मनुष्य के ऊपर इन दिनों असुरता का आक्रमण हुआ है और सूर्य-चन्द्र पर पड़ने वाली राहु-केतु की छाया की तरह ग्रहण लग गया है। यह असमंजस की घड़ी अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकती। अंधकार के बाद प्रकाश आता ही है। अब प्रभात के सूर्योदय का प्रकाश उदय होने में देर नहीं। ऊषाकाल की आभा प्राची में लालिमा बनकर प्रकट हो रही है।

कहना न होगा कि अगणित रूपों में प्रस्तुत विपत्तियों का एक ही कारण है-मानवीय कर्त्तव्य में निकृष्टता का समावेश और उसका निमित्त है अशुद्ध चिन्तन एवं विकृत दृष्टिकोण। सड़े तालाब में से लाख-करोड़ मच्छर पैदा होते हैं। एक-एक मच्छर को पकड़ना और मारना कठिन है। तालाब की सफाई करने से ही उस विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। विपत्तियाँ और विकृतियाँ भौतिक अवश्य हैं पर उनका स्थायी समाधान दार्शनिक आधार पर ही किया जा सकता है। युग परिवर्तन का मूल उद्गम इसी पर केन्द्रित है। भगवान वह प्रक्रिया खड़ी करने जा रहे हैं, जिसमें मनुष्य को अशुद्ध चिन्तन के दुष्परिणामों का भान हो-वह अपनी भूल समझे और उसे सुधारने के लिए उलट पड़े। यह प्रक्रिया जिस क्रम से सम्पन्न होगी, उसी अनुपात से विकृतियों के समाधान अनायास ही अप्रत्याशित रूप से निकलते चले आयेंगे।

दूसरा दूसरों को न तो खींच सकता है और न दबा सकता है। बाहरी दबाव क्षणिक होता है। बदलता तो मनुष्य अपने आप है, अन्यथा रोज उपदेश, प्रवचन सुनकर भी इस कान से उस कान निकाल दिये जाते हैं। दबाव पड़ने पर बाहर से कुछ दिखा दिया जाता है और भीतर कुछ बना रहता है। इन विडम्बनाओं से क्या बनता है। बनेगा तो अन्त:करण के बदलेने से, और इसके लिए आत्मप्रेरणा की आवश्यकता है।

इन दिनों यही होने जा रहा है। सबसे पहले जाग्रत् आत्माओं के भीतर आत्मपरिवर्तन की तिलमिलाहट पैदा होगी। वे गहराई से आत्मा-निरीक्षण करेंगे। अन्धी भेड़ों के गिरोह में से अपने को अलग निकालेंगे और स्वतन्त्र चिन्तन करेंगे। 'लोग ऐसा करते हैं तो हम भी ऐसा करेंगे' का परावलम्बन बहिष्कृत होगा। विशेषतया तब, जबकि जनमानस में घोर अविवेक और गहन अनाचार ने गहरी जड़ें जमा ली हों। ऐसे समय में दूसरों का प्रभाव ग्रहण करना, उनका अनुगमन-अनुकरण करना, उन्हीं की तरह अपने को पतन के गहरे गर्त में डाले रहना उचित नहीं।

युग परिवर्तन का आरम्भ व्यक्ति परिवर्तन की उग्र प्रक्रिया के साथ आरम्भ होगा। इसके लिए भगवान ऐसा सूक्ष्म प्रेरणा प्रवाह उत्पन्न कर रहे हैं, जो हर जीवित और जाग्रत् आत्मा को व्याकुल, बेचैन कर दे। अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए हर घड़ी विवश कर और उसे घसीटकर उस स्थान पर खड़ा कर दे, जहाँ स्वतंत्र चिन्तन अनिवार्य हो जाता है। विवेक का प्रकाश जब अपनाया जाता है तब अँधेरे की आशंकाएँ और विभीषिकाएँ सभी तिरोहित हो जाती हैं। ईश्वरीय प्रकाश विवेक के रूप में अवतरित होता है और जहाँ भी वे दिव्य किरणें पड़ती हैं, वहाँ अंधानुकरण एवं पूर्वग्रहों का विनाश होता है। मनुष्य इतना साहस अनुभव करता है कि औचित्य के मार्ग पर अकेला ही चल पड़े। भले ही उसके तथाकथित शुभचिन्तक उसके लिए उसे रोकते, टोकते ही रह जाएँ।

आत्मपरिवर्तन के साथ-साथ यही जाग्रत् आत्माएँ विश्व परिवर्तन की भूमिका प्रस्तुत करेंगी। जाग्रत आत्माओं में एक असाधारण हलचल इन दिनों उठ रही है। उनकी अन्तरात्मा उन्हें पग-पग बेचैन कर रही हैं, ढर्रे का पशु जीवन नहीं जिएँगे, पेट और प्रजनन के लिए, वासना और तृष्णा के लिए जिन्दगी के दिन पूरे करने वाले नरकीटों की पंक्ति में नहीं खड़े रहेंगे, ईश्वर के अरमान और उद्देश्य को निरर्थक नहीं बनने देंगे। लोगों का अनुकरण नहीं करेंगे, उनके लिए स्वत: अनुकरणीय आदर्श बनकर खड़े होंगे। यह आन्तरिक समुद्र मन्थन इन दिनों हर जीवित और जाग्रत् आत्मा के अन्दर इतनी तेजी से चल रहा है कि वे सोच नहीं पा रहे कि आखिर यह हो क्या रहा है वे पुराने ही हैं पर भीतर कौन घुस पड़ा, जो उन्हें ऊँचा सोचने के लिए ही नहीं, ऊँचा करने के लिए भी विवश, बेचैन कर रहा है! निश्चित रूप से यह ईश्वरीय प्रेरणा का अवतरण है।

नव जागरण का प्राथमिक श्रेय निश्चित क्रम से सुसंस्कारी जाग्रत् आत्माओं को मिलेगा। वे ही आगे आवेंगी, मशाल की तरह जलेंगी और सर्वत्र प्रकाश उत्पन्न करेंगी। अविवेक और अनौचित्य के बन्धनों से वे स्वयं मुक्त होंगी। और अपने आदर्शों से असंख्य लोगों को अनुगमन के लिए प्रभावित ही नहीं, बाध्य भी करेंगी।

युग निर्माण परिवार ऐसी ही जाग्रत् और सुसंस्कारी आत्माओं का समूह है। संयोग ही कहना चाहिए कि उसे इन बिखरे हुए मणि-माणिक्यों को एक सूत्र में आबद्ध होकर एक बहुमूल्य माला के रूप में गुँथ जाने का अवसर मिल गया। अगले ही दिनों युग निर्माण परिवार का प्रत्येक घटक अपनी वह भूमिका प्रस्तुत करेगा, जिसका विस्तार युग परिवर्तन के रूप में असंदिग्ध रूप में दृष्टिगोचर हो सके।

वाङ्मय 'युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम' (पृष्ठ १.१६ से १.१७) से संपादित

पूरे आध्यात्मिक वैभव के साथ हुआ सन् २००८ का स्वागत

गायत्री तीर्थ-शांतिकुंज के आश्रम वासियों, जीवन विद्या के साधकों, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और हजारों गणमान्य अतिथियों ने पूरे आध्यात्मिक वैभव के साथ वर्ष २००८ का स्वागत किया। इस अवसर पर युगतीर्थ में लगभग ८००० परिजन उपस्थित थे। शांतिकुंज की दैनिक दिनचर्या के अंतर्गत प्रात: आद्यशक्ति आदरणीय डॉ. साहब ने नववर्ष की मंगल कामना और प्रसाद के साथ अपने शुभाशीष प्रदान किये। नववर्ष का शानदार शुभारंभ करने शांतिकुंज पहुँचे साधकों के 'हे प्रभु! जीवन हमारा यज्ञमय कर दीजिए। सृष्टि को सुरभित करें हम, शक्ति वह भर दीजिए। नये युग का करें सृजन हम संकल्प यह दृढ़ कीजिए....।' जैसे मनोभाव और प्रार्थना

आदरणीया जीजी-डॉ. साहब से नववर्ष का मंगलमय संदेश और प्रसाद ग्रहण करते नवयुवक तथा इन्सेट में गुरु स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' के समक्ष प्रणाम करते श्रद्धालु

माँ गायत्री की आरती, परमपूज्य गुरुदेव के निर्देशन में स्थूल-सूक्ष्म एवं कारण शरीरों में सविता-शक्ति एवं शांतिकुंज की तीर्थ चेतना के अवतरण के ध्यान तथा यज्ञ करने के बाद सभी ने गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा', उनकी चरण पादुकाएँ तथा अखण्ड ज्योति के दर्शन किये। तत्पश्चात् आदरणीया शैल जीजी एवं प्रात:काल पूरे आश्रम में गूँजते शुभ संकल्पों से ओतप्रोत प्रज्ञागीतों के साथ मुखरित होते रहे।

आदरणीय डॉ. साहब ने नववर्ष पर दिये गये अपने मंगल कामना संदेश में समय की चाल के साथ बहने की बजाय युग के प्रवाह को पलटने वाली जनभावनाओं का हार्दिक स्वागत

...... **आगे पृष्ठ ७ पर**

रामसेतु को बचायें, इसे वैश्विक धरोहर बनायें

आस्थाएँ व्यक्ति को शक्ति प्रदान करती हैं। जब आस्था टूटती है तो नि:संदेह व्यक्ति आहत और कमजोर होता है। भगवान् राम द्वारा निर्मित 'रामसेतु' भी करोड़ों भारतीयों की आस्था का केन्द्र है। यदि इसे क्षति होती है, तो हमारी संस्कृति तथा आस्था को चोट अवश्य पहुँचती है। वर्तमान में कुछ स्वार्थों की दुहाई देकर अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर रामसेतु को नष्ट करने का जो प्रयास चल रहा है, उससे उसकी रक्षा की ही जानी चाहिए। सरकार इसे नष्ट कर छोटे मालवाहक जहाजों के लिए रास्ता बनाना चाहती है, जबकि इसे नष्ट किये बिना भी रास्ता बनाने का अधिक लाभकारी एवं सस्ता विकल्प भी उपलब्ध है।

प्राचीन काल से लेकर अब तक आक्रांताओं ने हमारी सहिष्णुता का लाभ लेकर हमारी संस्कृति को नष्ट करने का जो प्रयास किया है, वह सर्वविदित है। तथ्यों की पड़ताल करने पर रामसेतु को नष्ट करने का प्रयास भी ऐसा ही षड्यंत्र प्रतीत होता है। हम असहिष्णु तो नहीं, किंतु सत्याग्रही अवश्य हैं। अत: हमें शांति और सत्याग्रह का मार्ग अपनाकर ही सही, रामसेतु के प्रति अपनी आस्था का परिचय अवश्य देना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय रामसेतु वैश्विक धरोहर अभियान समिति, इंदौर एवं अखिल भारतीय स्वदेशी संघ ने रामसेतु को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित कराकर इसकी रक्षा करने के लिए 'ताज' की तर्ज पर एस.एम.एस. अभियान चलाया है। यह एस.एम.एस. अभियान २ अक्टूबर २००७ से अनवरत चल रहा है। इसमें आप भी भागीदारी कर सकते हैं।

हम रामसेतु को क्यों बचायें?

यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, जो हमें प्राकृतिक संरक्षण प्रदान करता है, पर्यावरण की रक्षा करता है और हमें ऊर्जा-समृद्ध बना सकता है। देखें, निम्न तथ्य :-

...... **आगे पृष्ठ ७ पर**